

मासिक —



# मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अप्पवाल

वर्ष 10	बुधवार 10 अगस्त, 1983	संख्या 4
---------	-----------------------	----------



जज्ञान में तुम वेशक माला फेरते रहो, राम-राम जपते रहो, अन्नाहू करते रहो, राधास्वामी जपते रहा, पाँच नाम सुमिरन करते रहो, अगर यह हालत तुम में नहीं आई कि दुनिया के हालात और वाक्यात में रहते हुए आपको अगर चिन्ता, फ़िरक़ा और ग़म नहीं व्यापता तब तो तुमको नाम की प्राप्ति मिल गई और अगर नाम जपते हुए तुम ही चिन्ता भी आता है, फ़िरक़ा भी आता है, ग़म भी आता है, तो फिर वह नाम नहीं। वो नाम नहीं है।

अब मैं अपना आत्मा से पूछता हूँ कि वह नाम तू ही काग़ नहीं व्यापता क्या वह नाम है या यूँ ही सन्तों ने ऊटपटांग लिख दिया हुआ है, पागल बनाया हुआ है दुनिया को ? वह नाम है। उस नाम को सन्त कहते हैं :—

नाम रहे चौथे पद माहि ।

यह हूँ त्रिलाकी माहि ॥

वह नाम है चौथे पद में। चौथा पद क्या होता है ? एक जिस्म, एक मन और एक हमारी आत्मा, जो तीनों दर्जों से निकल कर ऊपर जा सकता है यानि इन तीनों के ; जिस्म के एहसासात, को मन के खयालात को और आत्मा के आनन्द के



( 5 )

भावों में जो नहीं फँसता और इससे आगे जा सकता है उस आगे जाने की अवस्था का नाम है नाम को प्राप्ति । पुरुषोत्तम दास ! सुन रहा है ? क्या वह रहा हूँ मैं ।

अब मेरे दिल में यह सवाल पैदा होता है कि हमको तो भई यह सुमिरन, ध्यान बताया गया है, सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, शून्य, महाशून्य, भँवरगुफा या भूर् भुवः स्वः महः जनः तपः जितने दर्जे हैं षट्-चक्र जिस्म के, निचले दर्जे शरीर के, शारीरिक जिन्दगी के एहसासात, मन की जिन्दगी के एहसासात और भँवरगुफा से लेकर सत्तलोक, अलखलोक तक भी यानि सुरत के एहसासात के दर्जे हैं । जब तक कोई आदमी इन दर्जों से गुजरता हुआ आगे नहीं जायेगा वह चौथे पद में जा कैसे सकता है ! तुम बैठो, ध्यान लगाओ, तुम्हारे अन्दर कर्भा खाज हो जायेगी, कभी मन के अन्दर तरह-तरह के कोई ख्यालात पैदा होने लग जायेंगे तो इसवास्ते नाम चौथे पद में रहता है, उसके हासिल करने के ये जरिये हैं और वे जरिये, मैंने अभ्यास करते - करते सारी उमर खो दी, उनसे छुटकारा मुझ तुम लोगों की बजह से मिला । जब से मुझ यह पता लगा कि मैं किसी के अन्दर नहीं



जाता तो मेरे अन्तर में जितने भी ख्यालात उठते हैं मैं इनको छोड़ जाना हूँ मगर आप लोग छोड़ नहीं सकते । अगर आदमी को यह ताकत आ जाये कि वह छोड़ दें तो फिर ज्यादा अभ्यास करने की कोई जरूरत नहीं ; इन्सान सीधा ही मन के और शरीर के तत्वकों को छोड़ के अपने आप को अपने आप में ठहरा सकता है । मगर यह मुश्किल है । इसवास्ते इसका साधन है और मैं अपनी तरफ से इसको आसान कर जाना चाहता हूँ ।

सन्तों ने इन दर्जों के नाम रखे हुए हैं :—  
सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, शून्य, महाशून्य, भँवर-  
गुफा, सत्तलोक, अलख, अगम, अनामी । अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने अभ्यास किया है, तू यह जो कुछ किताबों में लिखा हुआ है कि सहस्रदल कमल में घण्टा बजता है, शंख सुनाई देता है, मार कितनी-कितनी सिपतें लिखी हुई हैं, क्या ये ठीक हैं ? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ! क्योंकि मैं यह काम करता हूँ, मैं अपने आपको सच्चा बना के रखना चाहता हूँ । मैं कहता हूँ यह ठीक है । यह पहली सहस्रदल कमल की स्टेज जो है ! यह है तुम्हारे अपने मन की स्टेज ! इस मन में से अनेक



प्रकार की वृत्तियाँ निकलती रहती हैं ; ख्यालात हर वक्त निकलते रहते हैं । रहते हैं कि नहीं, तुम्हारे निकलने रहते हैं ? क्योंकि अनेक प्रकार के ख्यालात निकलते हैं इसवास्ते इसका नाम इन्होंने सहस्रदल कमल अर्थात् हजार पंखुडियों वाला फूल रखा हुआ है । अन्दर फल तो कोई नहीं, वह तुम्हारा मन है, उसके अन्तर से जो ख्यालात व विचार निकलते रहते हैं उसका नाम है सहस्रदल कमल । अब वो कहते हैं यहाँ पर, घण्टा बजता है । मैं पूछता हूँ कि कभी किसी सन्त ने कहा है कि घण्टा क्यों बजता है ? कोई घड़ियाल है अन्दर तुम्हारे जो घण्टा बजता है अन्दर ; वह आवाज़ क्यों बजती है घण्टे की ? जो मैंने समझा वह कहना चाहता हूँ । क्यों मुझे यह समझ आई ? क्योंकि मैंने पहले, जिन्दगी में, इन दर्जों को पास किया हुआ है । अब मैं लाख कोशिश करता हूँ कि मैं घण्टा सुनूँ या सारंग सारंग सुनूँ या ओकार सुनूँ, अब मुझे वो सुनाई नहीं देते । पहले मैं बसरे बगदाद में रहा, वहाँ सुनता था । यह पुरुषोत्तम दास मेरे साथ थे । हम इकट्ठे अभ्यास करते थे, यह सब कुछ मैं देखता था । अच्छा ! रोशनी मिलती है सहस्रदल कमल में पीले रंग की, त्रिकूटी में रोशनी



क, शून्य में रोशनी जिस तरह चाँद की महाशून्य में अन्धेरा, भँवरगुफा में सूर्य की रोशनी, ऐसे-ऐसे जिक्र थे वहाँ पर। अब मैं सोचता हूँ कि अब जो मैं अभ्यास करता हूँ, अब मुझे निचले नज़ारे (दृश्य) क्यों नज़र नहीं आते, यह एक सवाल है। मैं बहुतेरी कोशिश करता हूँ, कई बार सोचता हूँ, मैं गुमराह हो गया, मेरा अभ्यास ख़राब हो गया; यह भ्रम मुझे कई दफ़े आ जाता है। अब दाता दयाल तो हैं नहीं, कोई महात्मा नहीं, जिस किसी से कि पूछूँ कि इसमें राज क्या है। जो क्ल मेरी समझ में आया वह मैं बता देता हूँ दोस्तों! अगर मुझे कोई दावा नहीं कि जो बल में बढ़ता हूँ बही final है। मेरी जिन्दगी सच-ई से गुज़र गई, उमर मेंने खो दी सारी, अब मैं समझता हूँ कि फ़ैली स्टेज में घण्टा क्यों बजता है। जल शरसों के मन के अन्तर संसारी स्थल पदार्थों की इच्छाएँ होती हैं जब वह अभ्यास करेंगे उनको घण्टे की आवाज़ सुनाई देगी। क्यों? बाहर की धातुओं को मिलाकर हम घड़ियाल बना लेते हैं, उन पर ठोकर मारते हैं तो घण्टे की आवाज़ आती

हमारे मन के जो ख्यालात हैं इसमें भो पृथ्वी, पानी, हवा, आग और आकाश पाँच तत्त्व मौजूद हैं



तो जिस शस्त्र के अन्तर दुनिया को इच्छाएँ रहती, दौलत की, इज्जत की, सन्तान की, इस तरह **Gross Matter** की, वह जब भी अभ्यास करेगा तब उसके अन्दर घण्टा बजेगा। चूँकि मैं अब इस आज़ार (झंझटों) में आजाद हो गया हूँ इसलिए मैं लाख कोशिश करूँ मझे घण्टा नहीं मनाई देगा। यह मेरी समझ में आया है। पूरुषोत्तम दाम ! तू मेरा पित्र है, मैं आप बैगन होता हूँ कि मैं बहुतेरी कोशिश करता हूँ कि फिर घण्टा मनाया या रारंग सून, अब नहीं मनाई देता, अब वह आखिरी शब्द मनाई देता है जिसको साग शब्द बोलने हैं। तो मैंने यह समझा है। तो फिर मैं किध नतीजे पर आया ? कि, त्रिकुटी पर क्या होता है ? लाल रंग नजर आता है, गुरु की मूर्ति नजर आती है। त्रिकुटी के स्थान से तमाम वेद शास्त्र सब निकलते हैं। जिनना इल्म है त्रिकुटी से निकलता है यह लिखा हुआ है किताबों में। अब मैं सोचना हूँ क्या यह ठीक है ? हाँ यह ठीक है। बाहर में जब मैं किमी चीज को हाथ लगाऊँगा, जोर से पकड़ूँगा, मेरे मुँह पर सली आयेगी कि नहीं आयेगी, जब मैं जोर से पकड़ूँगा तो। इसी तरह से जब हम अपने अन्तर चलते हैं, मूर्ति



बनाते हैं गुरु की ओर अपने दृष्ट की तो हमारे मन का जोर लगाना पड़ता है, चूँकि सूक्ष्म नाड़ियाँ हैं हमारे अन्दर, उनमें खून के दौरे की वजह से हमको वह जगह लाल नजर आती है। इसवास्ते त्रिकुटी में लाली आती है क्योंकि मुझे अब यह यकीन हो गया है कि यह जो रूप मेरे अन्दर बनता है यह मेरा अपना ही बनाया हुआ है, आप समझते हो मेरा मतलब कि नहीं ? इसवास्ते अब मैं लाख काशिश करूँ, अब मेरे अन्दर वह लाली नहीं आयेगी। मास्टर मोहन लाल बैठा हुआ है ? (नहीं आया)। अब मेरे अन्दर लाली नहीं आयेगी क्योंकि मुझे यह यकीन हो गया है कि जिस रूप का मैं ध्यान करता था यह मेरा अपना बनाया हुआ था। इसवास्ते जिनको सत्संग में यह ज्ञान हो जाता है, उनके लिए ये निचले दर्जे अभ्यास करने की कोई जरूरत महसूस नहीं होती है, बिलकुल ! मैंने रास्ता इतना सफ़र कर दिया है कि जिस के लिए मुसीबत उठाने का कोई जरूरत ही नहीं है। समझ गये पुरुषोत्तम दास ! क्या कहा मैंने ! इसी तरह से, अब इसमें से कैसे निकलते हैं वेद, ज्ञान ? जब हम किसी चीज़



( 11 )

प्रायः तत्त्व को देखना चाहते हैं तो हम हाते हैं, एक जिस चीज को देखते व Research करते हैं एक वह होती है, एक हमारी लगन होती है। ये तीन चीजें इकट्ठी होती हैं त्रिकुटी में। तो जो ज्ञान हमें हासिल करते हैं तभी होगा जब हम किसी चीज को देखकर के उसकी तरफ रागव (खल/यमान) करते हैं। तो जितने इल्म हैं ये सारे, साइन्स इत्यादि, यह सब, Research इन्होंने कैसे को है? यहाँ (मस्तक के बीच में) बैठ के यहाँ ध्यान करते थे। जिस चीज का ख्याल करते रहे उनको दिमाग अपने आप चलता रहा; कोई साइन्स में अंतरवकी कर गया, किसी ने एटम-बम्ब बना दिये, यह जितना खहाती दुनिया का ज्ञान है यह सब त्रिकुटी की मंजिल से निकलता है क्योंकि उसमें एकसूई हो जाती है। अब कहते हैं वहाँ बादल की गरज होती है। कोई ऊपर उसके बादल गरजता है? नहीं! बादल नहीं है। वह जिस तरह सूर्य समुद्र से पानी को खेंच लेता है और ऊपर जा के हवा बन जाती है, इसी तरह से जब हम दुनिया की इच्छाओं व कामनाओं को छोड़ कर सिर्फ परमार्थ के रंग में



ऊपर जाते हैं तो हमारी जो दुनिया की अर्थात् स्थूल पदार्थ की इच्छाएँ हैं ये खत्म हो जाती हैं : मगर आइन्दा आगे जाने की इच्छा होती है तो हमारी वृत्तियाँ जो हैं ये इकट्ठी होती हैं। इकट्ठी होने से, ख्यालात जो हमारे इकट्ठे थे ये ऊपर जाकर के दिमाग के अन्दर इकट्ठे होके, आपस में रगड़ खाते हैं, वहाँ इनकी आवाज बम-बम या ओम्-भाम् निकलती है और यही मुकाम है। इसी मुकाम से तीन चीजें पैदा होती हैं: ख्याल पैदा होता है, ठहरता है, फिर खत्म हो जाता है—ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्हीं से सृष्टि की रचना होती है। तो जब हमारा मन यहाँ इकट्ठा हो जाता है यहाँ, उसको आम कहते हैं, वह ओम् का बिन्दु (नुक्ता) हो जाता है। उसको जाहिर करने के लिए हमने नुक्ता दे दिया मगर वास्तव में यह हमारा मन जो है यह वहाँ इकट्ठा हो जाता है, अकेला हो जाता है; ख्यालात छूट जाते हैं, उस वक्त जो हमारी अकम्पा होती है, वृत्तियाँ खिंचो हई होती हैं, वहाँ सारंग और रारंग की आवाज होनी है। क्यों? जिस तर सारंगी में आप तारें खींच लो, उसके ऊपर गज्र चलाओ तो



रारंग, सारंग बजता है, ऐसै ही जब मन की वृत्तियाँ अभ्यास में इकट्ठा हो जाती हैं, उसके ऊपर सुरत चलती है वहाँ जो आवाज़ आती है उसको रारंग, सारंग कहते हैं ।

तो मेरे कहने का मतलब क्या है, कि हमारा मंजिले मकसूद क्या है ? हमारा मंजिले मकसूद नाम की प्राप्ति जहाँ हमको कोई श्रम, फिक्र, चिन्ता वहम और भ्रम न रहे । यही है न गुरुइज्जम में ? :-

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।

चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित न व्यापे काल ॥

हमने नाम क्यों जपना ? ताकि हम इस दुनिया में रहते हुए हमारे को डर, फिक्र, चिन्ता, भ्रम वहम न आये, इस गरज के लिए हमने नाम जपना है । तो इसके हासिल करने के लिए मन को वृत्तियों को इकट्ठा करना है ताकि मन की वृत्तियों का दखलबाँद करने के बाद फिर आप मन को छोड़ जायें । अगर बात समझ में आ जाये तो इन निचले दर्जों के साधन करने की कोई जरूरत नहीं । सिर्फ अपने आप का



अपने अन्तर में मन को छोड़ कर आगे ले जाओ, कोई ज़रूरत इन साधनों की नहीं है। यही बात दाता दयाल ने काशीनाथ मुस्तार (गोरखपुर) को कही थी कि वक्त आयेगा जब आइन्दा आने वाले सन्त यह अभ्यास का तरीका सीढ़ी से शुरू करेंगे। जिस तरह राधास्वामी मत या कबीरमत ने यह बाको षटचक्र छोड़ा दिये तो आइन्दा आने वाले सन्त जो हैं वह इस मन के चक्कर से भी छोड़ा देंगे। क्या ज़रूरत है इस मन के चक्कर में फँसने की !, मगर जिनको मन के आनन्द की ज़रूरत है, जो मन की इच्छाओं में फँसे हुए हैं उनके लिए यह मन का साधन है। मगर जो अगर अपने घर जाना चाहते हैं उनके मन के चक्कर के साधन की कोई ज़रूरत नहीं, सिर्फ अपने मन को छोड़ के साधा अपने आप में ठहरने की कोशिश करें। प्रकाश ही गुरु के चरण हैं और शब्द गुरु का रूप है। अगर यह हो जाय फिर क्या होगा ? सिर्फ अभ्यास करने से आपका काम नहीं बनेगा। अभ्यास के साथ किसी निर्वन्ध, वीतराग या मायातोत पुरुष की संगत की ज़रूरत है तर्क इस दुनिया का सारा भेद बताकर तुमको



वैराग्य दे दे ताकि तुम इस संसार के चक्कर में इच्छा न रखो। इसवास्ते यह सन्तमत जो है यह साधारण गृहस्थियों की चीज नहीं है। बिलकुल नहीं। यह तो खाम-खास आदमियों के लिए है। खाम-खास आदमी हैं जिनको अपने घर जाने की जरूरत है; जो दुनियादार हैं उनके लिए यह सन्तमत का नाम नहीं है। उनके लिए है वेदमार्ग—अपना ख्याल ठीक रखो, ध्यान बनाओ, रूप बनाओ, राम का बनाओ, कृष्ण का बनाओ, एक का बनाओ। जिस वक्त तुम्हारा मन इकट्ठा हो जायेगा तुमको दुनिया की सब चीजें अपने आप मिलती रहेंगी।

— यह पहला दर्जा जो है इसमें अभ्यास करने वाले को अगर वह मूर्ति बना ले या-ज्योति-प्रकट कर ले उसकी दुनिया की-जितनी वासनाएँ हैं, अपनी, वे पूरी होनी चाहिए और होती हैं। जो दुनिया चाहते हैं, संसार की उन्नति चाहते हैं, स्थूल मादे को हासिल करना चाहते हैं उनको पहले दर्जे पर अभ्यास करना चाहिए यहाँ (भू-मध्य में), जहाँ मैंने उगेली रखी हुई है। यहाँ गुरु का रूप बना लो या सुमिरन



से मन का इकट्ठा करो और यह वासना रखो जो कुछ तुम चाहते हो, अगर ना मिले तो मैं जिम्मेवारी लेता हूँ। क्योंकि मैंने तजूर्बा किया है ना! बाहर जाता हूँ, लोग मेरे पास आते हैं वे कहते हैं बाबा जी! हमें यह चाहिए! अच्छा भई! तू ध्यान किया कर और मांगा कर, मिल जायेगा। जब फिर जाता हूँ, बाबा जी! मेरा काम हो गया। कई कहते हैं मेरा काम नहीं बना। मैंने कहा तेरा ध्यान बना कि नहीं बना? अरे भई! ध्यान तुम्हारा नहीं बना तो बाबा क्या करे। देखो! मैं तुमको धोखा नहीं दे रहा, अज्ञान में आके इन गुरुओं के आगे मत लुटो। हम गुरुओं ने हम लोगों को बिलकुल सच्ची बात नहीं बताई, अपना मान, अपने डेरे और अपनी दौलत के लिए हमको अपने जाल में फँसाया हुआ है। यह मैं दर्द-दिल से कहता हूँ। मेरी जिन्दगी गुजर गई सच्चाई की खोज में; तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे अपने विश्वास, अपने प्रेम और अपने यत्कीन का फल मिलता है; कोई बाहर का गुरु, कोई बाहर का महात्मा कोई कुछ नहीं देता! हाँ! वह अगर देता है तो तुम्हारे इयाल को बदल देता है। ऐसी



( 17 )

बात कहता है जिससे तुमको विश्वास आ जाये, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हारा काम करना है। तुम लोग मेरी सेवा करते हो, नारायण दास, यह सब, मैं अगर यह सच्चाई नहीं बयान करता, यह सेवा तुमसे लेता हूँ यह तो खा जायेगी मेरी जान को ! मैं आऊँगा कहाँ !! क्योंकि मैंने तुमको धोखा दिया है !!! ज्ञानदाता की हैसियत से अगर तुम मेरी इज्जत करते हो, मेरी सेवा करते हो, मैं उसको कबूल (ग्रहण) करने के लिए तैयार हूँ। आग लगे गुरुआई को, मेरी चार दिन की जिन्दगी है, मैंने मर जाना है। जो इस वक्त मैं खोटे कर्म करूँगा यह मैं भरूँगा। इन महात्माओं का क्या अंजाम होगा मुझे नहीं पता। क्या कहा मैंने !

तो अगर दुनिया चाहते हो तो यहाँ ध्यान किया करो। वह जो रूप तुम बनाते हो उसको पूरा मानो; यह मत समझो फ़कीर चन्द है होशियारपुर का। उसको यह समझो कि यह पूरा है। जिस तरह मूर्ति है दाता दयाल की ! हम यह तो नहीं कहते यह पत्थर किं तीमू है ॥ तुम लोग मेरे पास आते हो, मैंने



प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता  
 दयाल ने कहा था तालीम बदल जाना, मैं तालीम  
 बदले जा रहा हूँ। क्या कह रहा हूँ? ऐ इन्सान!  
 अपने अन्तर अगर दुनिया के कारोबार की तरक्की  
 चाहता है, तो यह मुकाम जो सहस्रदल कमल का  
 है यहाँ ध्यान किया कर। ज्योति का कर ले, गुरु  
 स्वरूप का कर ले। तो जिम वासना को लेके तुम  
 अभ्यास करोगे तुम्हारी वासना पूरी होगी! होगी!!  
 होगी!!! कोई रोक नहीं सकता क्योंकि यह  
 Law of Nature (प्रकृति का नियम) है। दुनिया की  
 चीजों के लिए यहाँ ध्यान करो। और यही गायत्री  
 मन्त्र की Research करने वाले, जादू करने वाले  
 करते हैं; ख्याल की ताकत है नां और तो कुछ नहीं!  
 और अगर समझ चाहते हो, कोई Research चाहते  
 हो, ज्ञान चाहते हो, अनुभव चाहते हो तो त्रिकुटी  
 (मस्तक के बीच) का मुकाम है। जिस चोज़ की  
 स्वाहिश है उस ख्याल को लेकर के यहाँ बैठ जाओ,  
 उसी के ऊपर सुमिरन करते रहो तुम्हारी मदद  
 होती रहेगी। अगर मस्ती चाहते हो, मस्ती जानते  
 हो नां? आनन्द चाहते हो त्रिष तरह शराब पी



( 19 )

होती है, तो सुन्न में अभ्यास करो, यह तुम्हारे अपने इख्तियार में है। मगर अगर तुम पार जाना चाहते हो यानि दुनिया के डर भय से बचना चाहते हो तो इन दर्जों पर अभ्यास करने से तुम नहीं बच सकते। फिर तुमको मन के इन तमाम ख्यालात को छोड़ना पड़ेगा, फिर मन से ऊपर जाना पड़ेगा अब मैं मन से ऊपर जाता हूँ क्योंकि मैं यह समझ गया कि यह दुनिया मेरी तो है नहीं ! मैं तो रहना नहीं !!

और सच पूछते हो, मैं इतना बकवास करता हूँ जब मुझको नाम भूल जाता है मैं गिर जाता हूँ ! गिर जाता हूँ ! कल हमारे जौड़ा साहिब मेरे मकान पर गये, मैं गिर गया। तुम पूछो कैसे गिर गया ? इन्होंने कहा कि हमारे डाक्टर साहिब हैं यहाँ और एक लड़की है वहाँ, उसका address लिख दिया और साथ लिख दिया एक बोतल शैम्पू की दे दो। इन अस्पताल वालों ने, ऐसे बेईमान हैं ये, इन्होंने मन्दिर के साथ बहुत बुरा सलूक किया है। तो उसने बात बताई, तो मुझे गुस्सा आया व अक्रसास आया। बजह यचले आये ता मैंने सोचा **प्रभु देव**



वेहया ! तू गुस्सा किस वास्ते करता है ! वह तो जिसकी जैसी आदत है वह करेगा ! तुमको गुस्सा क्यों आया ? तो यह मेरी गिरावट है । जिस आदमी को नाम मिल जाता है वह न गुस्सा करता है और न उसको खुशी होती है और न वह रोता है, न वह पीटता है । । fall ! मैं कल गिर गया !! मुझे क्या ! जो करेगा भुगतना पड़ेगा । मैं आपको सच्ची बात कहता हूँ नारायण दास ! रात को मुझे ज्ञान हुआ अरे तू बकवास करता है ! तुमको नाम मिला हुआ है ? अगर तुमको नाम मिला हुआ होता तो तुमको गुस्सा क्यों आता ?

तो नाम क्या चीज़ है ? नाम है अनुभव । यह तो संसार है ! रात को मैं अपने दिल में बहुत पछताया; मैंने कहा फ़कीर चन्द ! साधु बन गया ! लैक्चर देता है ! आप तो तू गिर गया !! तो नाम क्या हुआ ? सिर्फ़ शब्द सुनना नाम नहीं है ! अनुभव और ज्ञान नाम है !! जो शरस दोनों चीज़ों साथ रख कर चलता है वह इस रास्ते में कामयाब होता है । इस वास्ते बार-२ कहा जाता है, सत्संग और अभ्यास, दो चाज़ें :-



बिन सत्संग जो शब्द में पचते,  
वह भी मूर्ख जान ।

तो आज शब्द था :—

नाम दान प्रदान कोजे, गुरु दीन दयाल ।

चरण का नित ध्यान सुमिरन,  
चित न व्यापे काल ॥

गुरु है विवेक और नाम है शब्द । मगर अगर सिर्फ शब्द को सुनते रहोगे तुमको किसी कामिल का सत्संग नहीं मिला; देखो न ! रात को मुझे सत्संग मिल गया, जौड़ा साहिब ने मुझे बात बताई, मैंने क्या समझा ? यह दाता दयाल आ गये । यह गुरु ने आके मुझे चेतावनी दी कि तेरे अन्दर यह नुक्स है तो मैंने अपने नुक्स को दूर करने की कोशिश की । सन्तमत में आना महा कठिन है मगर इतनी बात मैं कहे देता हूँ कि, भासान मैंने कर दिया—कुछ नहीं करना, सिर्फ अपने आपको विचार के साथ रहते हुए, दुनिया में ना फँसाओ । एक मालिक है ! एक रूप उसका मान लो । अपने आप को वहाँ समझो । समझ लो कि यहाँ तो हमने



रहना नहीं। मैं अब समझता हूँ! रात को मैंने आप को बड़ी लानत (फिटकार) दी। इन्होंने बात कही मुझे गुस्सा आ गया, मैंने कहा मैं सुबह उस डाक्टर की खबर लूंगा। फिर यह चले आये तो मैंने सोचा फ़कीर चन्द! तू नामधारी बना हुआ है, तू ने काहे को नाम लिया! तुम्हें क्यों गुस्सा आया? तू समझता है मन्दिर तेरा है, तेरे बाप का मन्दिर है? जिसने चोरी करनी है भड़वे ने, उसने चोरी करनी है, जिसने डाका मारना है उसने डाका मारना है, तू क्यों चिन्ता करता है! मैंने अपने आप को समझाया तब मुझे शान्ति मिल गई।

तो नाम क्या चीज़ है? नाम सिर्फ़ शब्द को सुनना ही नहीं है। शब्दयोग इसवास्त्रे किया जाता है कि हमारे मन के चित्त की वृत्तियाँ ये एकाग्र हो के किसी बात को समझने के क़ाबिल बन जायें। समझते ही पुरुषोत्तम दास! क्या कहा मने? अभ्यास इसलिए कराया जाता है कि हमारे चित्त की वृत्तियाँ, बे ठहर करके, हम किसी बात को समझने के योग्य हो जायें। जब तक सत्संग किसी





के मर गये ! गुरु के चरण प्रकाश हैं, नूर हैं। अपने अन्तर प्रकाश के साधन को पकड़ो तब गुरु के चरण पकड़ोगे। मगर यह हो नहीं सकता क्योंकि तुम्हारे मन में दुनिया की वासनाएँ हैं, क्रोध है, काम है, लालच है, लोभ है तो क्या फ़ायदा ! जो आमी चांसोबीस, हेराफेरी करता है वह अब कहे कि मैं सत्तलोक चला जाऊँगा, उसका बाप भी नहीं जा सकना जो मर्जी चाहे करे। आज शब्द था :—

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल।

मैं क्योंकि गुरु अपने आप को कहता हूँ, 'नामदान' यही मेरा नामदान है कि ऐ इन्सान ! अपने विचार से अपने आप को समझ ले तू कौन है। यह दुनिया तेरी नहीं है; तेरा घर ऊपर है। वह शब्द जो सार शब्द है उसको पकड़। इतना ही झगड़ा है और कुछ भी नहीं है :—

चरण का नित ध्यान सुमिरन,  
चित न व्यापे काल ।



( 25 )

किस चरण का ? प्रकाश का । गुरु के चरण प्रकाश हैं । प्रकाश को पकड़ो अगर पार जाना चाहते हो तो । और जब तक नहीं आता तो जिस गुरु से तुमने नाम लिया हुआ है उसका ध्यान करो, उसको मत समझो वह फकीर चन्द है या चरण सिंह है । वह जा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है उसको समझो यह पूरा है, तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा । अगर तुम यह समझते रहोगे कि तुम्हारे अन्दर जो गुरु आया यह बाबा चरण सिंह आया या फकीर चन्द आया तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा, दुनिया मिल जायेगी, तुमको यह ठीक है; दुनिया के काम बन जायेंगे मगर परमार्थ नहीं मिलेगा । यह है राज जो मैं बताना चाहता हूँ । किनके लिए ? जो चाहते हैं कि हमारा बेड़ा पार हो जाये, उनके लिए और जो नहीं चाहते उनके लिए कोई जरूरत नहीं :—

सर्व समर्थ सर्व अंग संग, सर्व जगत आधार ।

अब देखो ! बाहर के गुरु की अगर यह स्तुति होती ! तो क्या वह हर वक्त तुम्हारे साथ रहता है ? तुमने मुझे गुरु कर लिया फर्ज करो, क्या मैं



( 26 )

तूरे साथ चौबीस घण्टे रहूंगा ? वह कहते हैं  
'सर्व समरथ', 'सर्व अंग संग' वह अंग संग रहने वाला  
कौन है ?

ऐ दिवानो ! ऐ मेरे फ़कीर चन्द मन ! तू भी  
पागल रहा सारी ज़िन्दगी ! वह ताक़त है, वह हर वक़्त  
तुम्हारे पास रहती है और वह है प्रकाश की ताक़त और  
वह है शब्द की ताक़त, तुम्हारे अन्दर रहती है :—

सर्व समरथ सर्व अंग संग सर्व जगत् आधार ।

आह ! अब फ़कीर चन्द जगत् आधार हो सकता  
है ? सोचो मेरी बात को ! हो सकता है तो मुझे  
बताओ !! वह एक ताक़त है, उसके रूप को समझ  
कर तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा :—

शुद्ध मन से पद कमल को करूँ निसदिन प्यार ।

अपने मन को साफ़ रख के, अपने अन्तर में  
ज्ञांक के देखो मालिक, सत्तगुरु तुम्हारे अन्तर रहता  
है ! बाहर नहीं रहता !! अपने आप को सच्चा  
बना करके उसके आगे उससे ध्यार किया करो,



( 27 )

तुम्हारा काम हो जायेगा, दुनिया भी बन जायेगी,  
दीन भी बन जायेगा । करना तुमने अपने आप है,  
किसी बाहर के गुरु ने नहीं करना :—

सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।  
त्रिकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊँ किनार ॥

मन का समुद्र जो है, मन के ख्यालात जो हैं  
तरह-२ के उठते रहते हैं । अब मैंने बोला कि न बोला  
कि रात को जौड़ा साहिब ने मुझे कहा कि यह हुआ  
अस्पताल में, तो मुझे गुस्सा आ गया । तो मैं कहाँ  
फँस गया ? अपने मन के समुद्र में फँसा कि नहीं  
फँसा ? सारे ही फँसते हैं । मैं कई दफ़ा कहा करता  
हूँ मैं गिर जाता हूँ, यह है मेरा गिरना । कब गिरता  
हूँ ? जब मुझे गुरु ज्ञान नहीं रहता; जब मुझे  
समझ नहीं रहती । यह भूल जाता हूँ कि मैं हूँ  
कौन ? तब मैं फँसता हूँ । मैं क्या ! बड़े-बड़े फँसते  
हैं । मगर जो फँस के, अपने आप का समझता है  
मैंने गलती खाई है उसका तो उद्धार हो सकता है  
मगर जो फँसता है और फिर अपनी ग़लती को भी  
नहीं महसूस करता उसका उद्धार नहीं होता :—



( 28 )

चलते चलते जो गिरे, ताहे न लामे दौस ।  
जो घर से ही न चले, ता सिर करड़े कोस ॥

गलतियाँ सब खाते हैं । कोई इन्सान ऐसा नहीं जिसमें गलती नहीं है, बुरी, भली सब । जो आदमी अपने आप को बचाना चाहता है वह हमेशा अपने मन की हालत को Watch किया करे । रात को सोते हो, सारा दिन तुमने क्या कुछ किया ? जहाँ-जहाँ तुमने गलतियाँ खाई हैं उनको फिर दोबारा न करने की कोशिश करो, जिन्दगी बन जायेगी :—

दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरन लगाय ।  
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय ॥

तो बाहर के गुरु की क्या ड्यूटी है ? जो मैं कर रहा हूँ । कि ऐ इन्सान ! असली गुरु शब्द स्वरूप है, उसके चरण प्रकाश हैं । अपने अन्तर चल । जो कुछ तुमको मिलना है, तुम्हारे अन्तर से मिलना है । आप लोग आ जाते हैं, मैं तो अपने कर्मों का मारा हुआ हूँ (गला भर आया, आवाज़ भारी हो गई) सच्ची



( 29 )

बात आपसे कहता हूँ। मैं न यह कर्म करता, प्रण करता, तो न मैं इस चीज़ में फँसता। मैं सुखी नहीं हूँ इस काम से। मन्दिर बना बैठा, अब यहाँ के कर्मचारी हैं, ये डाकू हैं! चोर हैं! दवाइयें बेचते हैं, डाक्टर हो या कोई भी हो! मैंने क्या लिया? मुसीबत अपनी जान में ले ली! किया क्या मैंने? मगर यह मेरा कर्म था।

आप लोग आ जाते हैं, जो कुछ मैंने ज़िन्दगी में समझा आपको बता दिया। नाम क्या है? गुरु का हुक्म। जो गुरु हुक्म देता है वही इन्सान के लिए नाम है, उसके ऊपर चलो।

मैं नहीं कहता मैं गुरु हूँ। जहाँ-जहाँ तुम जिस गुरु को मानते हो उसी गुरु को मानो। मैंने तो गुरुमत को समझा है, सच्चे दिल से! और सच्चे दिल से यह चाहता हूँ दाता! आपने काम दिया था, मैं फँस गया हुआ हूँ। मुझे क्या पता था कि मुझे ऐसे आदमियों से वास्ता पड़ेगा जो क्या करते हैं यहाँ मन्दिर में! मन्दिर को बदनाम करते हैं। तो आज मैंने आप लोगों को बहुत कुछ कह दिया। मैं दुखी:



( 30 )

हूँ, अपने मन से । इनसे नहीं ! अपने मन से दुःखी हूँ कि भई ! तूने क्या लेना है फ़कीर चन्द ? चार दिन की जिन्दगी है मन्दिर रुढ़ जाये, तैनों की ! मगर रात को मुझे गुस्सा आ गया और मैंने महसूस किया कि मेरी गलती थी ।

तो आप लोग आ जाते हैं, आपको आज मैंने बता दिया कि नाम क्या है और कैसे मिलता है :-

नाम रहे चौथे पद माहीं ।

वह तुम्हारी अपनी ही ज्ञात है, प्रकाश और शब्द का भण्डार है । यह निचले दर्जे जो हैं, अगर दुनिया का मजा (आनन्द) लेना चाहते हो, मन का, तो निचले दर्जे का साधन किया करो और अगर बिलकुल पार आना चाहते हो तो मन का छोड़ के ऊपर चले जाओ । दोनों ही बातें हैं । आरती कर दो ! पुरुषोत्तम दास ! मर जाना है, हुण तैयार हो ! जमैं भी तैयार हूँ !!



# सत्संग परम सन्त परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि 11-8-74

## काल चक्कर

मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।  
मंगलम् अव्यक्त अनुपम, मंगलम् भव गंजनम् ॥  
मंगलम् धुरपद निवासी, मंगलम् सत् आसनम् ।  
मंगलम् निर्वाण सद्गति, मंगलम् जन रञ्जनम् ॥  
मंगलम् ज्ञान स्वरूपम्, मंगलम् आनन्द रूप ।  
मंगलम् चैतन्य सदनम्, मंगलम् सत सत्य भूप ॥  
मंगलम् योगीन्द्र माया, तीत मंगल दायकम् ।  
मंगलम् संसार सारम्, अद्भुत मुनि नायकम् ॥  
मंगलम् त्रय गुण रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम् ।  
मंगलम् त्रय काल ज्ञाता, मंगलम् भव नाशनम् ॥  
आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त जो ।  
मंगलम् करुणा सदन, शुभ तत्त्व परम जगत प्रभो ॥  
आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।  
शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखित उबारने ॥





गुरु की यह ऊपर के शब्द में लिखी सिफ़्तें हैं। अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ बेहया फ़कीर चन्द, तूने दुनिया में आकर क्या किया ! क्या यह सफ़ात तुम में हैं ? भव-सागर से पार कराने के वास्ते कोई आता है तो तू क्या कर सकता है ? यह एक सवाल है जो सच्चाई पसन्द इन्सान के नाते से अपने आप को पूछता हूँ। काश ! मैं पूरा तो नहीं बना, मगर आप सत्संगियों की बदौलत दाता दयाल की दया की वजह से मैं इस गुरु के स्वरूप को या गुरु मूर्ति क्या होती है, इसको किसी हद तक समझ गया हूँ। वह जो समझ मुझको मिली है अभी तो उसने मुझे बहुत कुछ शान्ति दी। उसी के आधार पर मैं यह काम करता हूँ क्योंकि दाता ने कहा था तालीम को बदल जाना।

इस दुनिया में कौन आदमी है जो बाह्य प्रभावों से प्रभावित नहीं होता ? सभी होते हैं, कोई बेटे के मरने पर प्रभावित हुआ, कोई मुल्क की तबाही पर प्रभावित हुआ, कोई कोई और मुसीबत आने पर प्रभावित हुआ। मैं इस संसार में आया, भिन्न-भिन्न



संस्कारों से प्रभावित हुआ और अशान्त हुआ ।  
 क्रुदरत मौज मुझको दाता दयाल के चरणों में ले गई ।  
 आज मैं दुःखी हूँ, अफ़सोस करता हूँ कि मैंने उनकी  
 इज्जत वह नहीं की जो मुझे करनी चाहिए थी;  
 मेरा तो काल मत के अनुसार उनसे प्रेम था । इस  
 शब्द में लिखा हुआ है :—

आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।  
 शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखित उबारने ॥

वह आके करना क्या है ? इन्सान के जीवन को  
 दुःखों से बचाने के लिए शब्दयोग बताता है । मैं  
 पापी हूँ, गन्दा हूँ, मुझ में हजारों ऐव हैं मगर मैं  
 सच्चाई पसन्द इन्सान हूँ । यह दुनिया जिसको हम  
 देखते हैं, जिसमें रहते हैं, यह है क्या ? दाता का  
 शब्द है :—

काल चक्र का सहज हिडोला, झूला अचरज न्यारा ।  
 सब कोई झूले झूला चढ़कर, काल झुलावन हारा ॥  
 चन्द्र, सूर दोऊ गगन में झूलें, झूलें नौ लख तारे ।  
 जीव जन्तु पृथ्वी में झूलें, नर पशु सकल विचारे ॥



यह दुनिया क्या है ? काल का चक्कर है । झूला कहते हैं पीघ को । यहाँ हर वक्त हर एक चीज़ हरकत में है । सूर्य चलता है, चाँद चलता है, हम चलते हैं, हमारा मन चलता है, हमारी आत्मा हर वक्त चलायमान है, सब संसार, यह चलता रहता है :—

राजा झूला रानी झूली, और प्रजा समुदाई ।  
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूले, झूली सब दुनियाई ॥

तमाम संसार चक्कर में है या कि नहीं है ? तो इस चक्कर को समझ के किसी के भी मरने का कोई अकसोस नहीं आता, न शोक ही होता है । बाज़े वक्त जब अपनी असलियत को भूल जाता हूँ तो अपने स्वार्थ के लिए ख्याल आ जाता है, किसी वक्त आ जाता है ! मैं निकल गया, मगर यह है ज्ञान । वह जो सतगुरु दुनिया में आता है, जिसकी तारीफ़ आपने सुनी है वह जीवों को क्या करता है ? वह जीवों को इस दुनिया का रूप बताता है कि यह दुनिया है क्या, यह संसार है क्या ? यह सारा काल का चक्कर है । तुम देखो ना ! क्या चक्कर हो रहा है; कहीं लड़ाइयाँ होती हैं, हाती हैं कि नहीं होतीं ? यह है क्या ?



( 35 )

यह है काल चक्कर । इसको न किसी ने रोका, न कोई रोक सकता है । सन्तों ने आवाज़ तो बुलन्द कर दी कि काल है, काल है, मगर काल है तो क्या काल को रोक लिया ? कह भी देते हैं सन्त, निर्दयी है जी, यह ज्वालिम है, तो निर्दयी और ज्वालिम कहने से काल अपना काम तो नहीं छोड़ता ! तुम उसको निर्दयी कह लो, ज्वालिम कह लो, समझते हो मेरा मतलब कि नहीं ! बुरा कह लो मगर क्या तुम्हारे या सन्तों के बुरा कहने से यह अपना कर्म छोड़ देगा ? यह एक सवाल है मेरे दिल में । तो सन्त क्या करते हैं ? जो मैंने समझा, प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा, वह इस संसार का रूप बता देते हैं जोव को जो इस काल चक्कर में आकर हाय-हाय करता है, रोता है, पोटता है, मरता है, यह करता है, वह करता है, उसको यह समझाते हैं : -

लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानो ।  
देवा झूले देवो झूले, जल थल अग्नी पानो ॥

सब ही हरकत में हैं । झूलने के मायने ?  
झूला झूलते हैं, हरकत ही होती है, कभी इधर, कभी



उधर, कभी इधर, कभी उधर, तो यह सब चीज़ ऐसे चक्कर में आई हुई है :—

काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे ।  
वह भी बचा न चक्र से अपने, झूला झूले सारे ॥

जिसने यह दुनिया बनाई है वह ताकत ! तुम इस ताकत को नहीं समझ सकते । बैटरी में एक इलैक्ट्रिक मोटर फ़ोर्स होती है जो वोल्टेज से नापी जाती है, वह कुटिस्थ होती है । उसमें से जो करंट निकलती है, सर्कट में काम करती है उस करंट का नाम काल है, तो वह भी वक़्त पर आके ख़त्म हो जाता है । करंट बैटरी से निकली, पंखे चलाये, बल्ब जगाये, सब कुछ चलाया, फिर मुड़ के फिर बैटरी में । वह कहते हैं यह भी सब संसार जब से सृष्टि बना है ऐसे ही उपजता रहता है और चलता रहता है :—

चढ़ीं पेंग सब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे ।  
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछड़ के होगये न्यारे ॥

तुम अब आये हुए हो, चालीस, पचास, सौ ।  
अदमी बैठा हुआ है, घण्टे के बाद आप भी बिछुड़



( 37 )

जायेगे, चले जायेंगे, यह दुनिया का हाल है। मेला होता है, कुम्भ पर लाखों आदमी इकट्ठे होते हैं, फिर बिछुड़ जाते हैं। परिवार में कोई बाप बनता है, कोई बेटा, चाचा, ताया बनता है, कुछ दिनों चैन उड़ाते हैं, फिर बिखर जाते हैं :—

एक दशा नित जो बरते, कोई नजर न आया ।  
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, ऋषि मुनि बचन न पाया ॥

वह जो गुरु है, जो इस संसार में आता है, वह जीवों को क्या बताता है ? भई ! यह तो दुनिया ऐसी ही है, कोई भी एकरस एक अवस्था में कभी कोई रह नहीं सकता; सब ही चक्कर में आये हुए हैं :—

पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलासा ।  
बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निबासा ॥

तुम देखो ! समुद्र से भाप निकलती है, पहाड़ों तक जाती है, बर्फ बनती है। बर्फ घुल के फिर पानी बनता है, पानी बह के फिर नीचे समुद्र में जाता है :—



( 38 )

नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा ।  
हम तो देखें खुलो दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा ॥

यह उस गुरु का कलाम है जिसने यह शब्द सुनाया था कि गुरु किसका नाम है, वह जीवों को कैसे उभारता है, कैसे उनको इस काल के चक्कर से जो दुःख और सुख उठाते हैं, जो हम घबराहट चैन, आनन्द, खुशी लेते हैं इससे वह कैसे बचाता है ? यही है नां कि वह गुरु स्वरूप में आया, उसने क्या किया ? जीवों को इस चक्कर के दुःख और सुख से जो हम उठाते हैं इससे बचाया, इसके अतिरिक्त वह इस चक्कर को और कुछ बदल नहीं सकता ! क्या कहा मैंने ! कबीर साहिब आये, राधास्वामी दयाल आये, दुनिया को बदल गये ? वह इस दुनिया का रूप दिखाकर जीव को इस दुनिया के दुःखों, सुखों का जो असर उसके दिमाग पर पड़ता है उससे उसको बचा देता है । वह कैसे बचाता है, बताता हूँ आगे :—

लकड़ी जलकर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी ।  
झाटी माटी में नहीं ठहरो, बनी काठ और लाठी ॥



लकड़ो कोयला हो जाती है, राख हो जाती है ।  
हम इसको ज़मीन में फँक देते है, वहाँ फिर एक वृक्ष  
पैदा हो जाता है ।—

विष्टा अन्न अन्न भय विष्टा, सोई सब कोई खावे ।  
यह प्रपंच है अद्भुत न्यारा, कोई बिरला लख पावे ॥

हम गन्दगी उठा के मैल डालते हैं नां, गन्दमन्द  
सब डाल देते हैं खेतों में, वही उस मैल की दूसरी  
शकल, उस का असर अनाज में जाता है, वही हम  
खाते हैं । तो दाता फ़रमावे हैं, यह ऐसा प्रपंच है  
कोई कोई आदमी इस प्रपंच को समझता है :—

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी वैसी ।  
वह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी ॥

जागते हैं तो चक्कर में हैं, स्वप्न में है तो  
चक्कर में, सो जाते हैं, फिर जागते हैं, फिर स्वप्न में  
जाते हैं यह चक्कर चलता रहता है; यह काल बली  
की रचना है, यह दुनिया ऐसे ही बनाई है :—



पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी  
कभी जड़ मिलजुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी ॥

यह सारा संसार एक चक्कर है, मैं कई बार  
सोचता हूँ, यह चक्कर है इसको कौन महसूस  
करता है ? मैं कहा करता हूँ, मेरा अनुभव  
यह कहता है कि हमारे अन्तर कोई ऐसी चीज़ है  
जो सब की साक्षी है। मेरे अन्दर कोई चीज़ है  
जो आँखों के द्वारा तुमको देख रही है। मेरे अन्तर  
कोई चीज़ है, किसी बात को बुद्धि के द्वारा समझ  
रही है। मेरे अन्तर कोई चीज़ है जो प्रकाश को  
देखती है और शब्द को सुनती है; वह खुद न  
शब्द है और न प्रकाश है। वह जो चीज़ है,  
वह है वह मालिक की अंश; वह है धुर-पद से आई  
हुई। तो जब वह यहाँ इस चक्कर में आई हुई दुःखी  
हो जाती है तो वह जो मालिक है, उसकी धार गुरु  
के रूप में आती है। वह इस चीज़ को समझकर  
इस चक्कर से निकालने के लिए आती है। चक्कर  
तो जैसा है तैसा ही रहता है; चक्कर जो जैसा है वह



चलेगा ! न किसी ने इसको रोका और न रोक सकता है । लोक-लोकान्तर बनते रहते हैं । तो वह इन्सान के अन्दर जो चीज़ है जिसको मैंने अभी बयान किया, कहता रहता हूँ. वह दुःखी होती है । इसको सन्त कहते हैं सुरत । जब वह दुःखी हो जाती है, पुकार करती है, फिर वह जो ताकत है, ज्ञात जिसको बोलते हैं. अकाल पुरुष, अनामी कह लो, जिसका कोई नाम नहीं, अल्ला कह दो, वह फिर इन्सानी रूप में आकर के उसको चिंता के उसको इस चक्कर से निकलने को तजवीज़ (उपाय) बताती है और वह बताने से पहले उसको उस चक्कर का रूप बताती है; संसार का रूप बताती है । तो यह दाता रूप बता रहे हैं :-

समुझत बने कथन नहि आवे, भन बानी अलसानी ।  
 कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी ॥  
 एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा ।  
 कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा ॥  
 झूले की है बिचित्र कहानी, कथा वार्ता न्यारी ।  
 नर को हम समुझावन आये, सुने न बात हमारी ॥



दीवानो ! दुनिया गुरुमत को नहीं समझती !  
 दुनिया यह समझती है कि गुरु की सेवा करने से  
 तुम्हारा पुत्र नहीं मरेगा, तुम्हारा भाई नहीं मरेगा,  
 तुम बीमार नहीं होगे। तुम यह नहीं होगे; अरे !  
 गुरु महात्मा तो आप बीमार हुए। यह जो कुछ  
 तुमको मिलता है यह तुम्हारे अपने इस काल चक्कर  
 के हिसाब से मिलता है। काल की दुनिया का और  
 कानून है और इससे बचने का और कानून है।  
 काल की दुनिया में रचने के लिए हमारा कर्म है,  
 हमारा ख्याल है, हमारे मन के विचार हैं, हमारे  
 मन की आशाएँ हैं। तो जो-२ कर्म किये हुए हैं  
 उनका फल सबको भुगतना पड़ता है। बाबा  
 सावन सिंह जी का क्या हाल हुआ, तुलसी दास जी  
 का क्या हाल हुआ, कल को मेरा क्या हाल हो !  
 समझते हो नां ! दुनिया ने गुरुमत को समझा नहीं  
 और समझने वालों का भी कोई क्रसूर नहीं, गुरुओं  
 ने समझाया नहीं। गुरुओं ने तो गुरुआई की अपने  
 डेरे के लिए, अपने मानवता मन्दिर के लिए, अपने  
 लालच के लिए, अपने मान के लिए, अपनी इज्जत  
 के लिए; सच्चाई तो हमें बयान नहीं की :—



दुःख सुख दुःख सुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया ।  
द्वन्द भाव ले जगत रचाया, द्वन्द के फाँस फँसाया ॥

यह दुःख सुख जो कुछ है, यह काल की सृष्टि में, दोपने में आते रहते हैं । इस संसार में यह मुरक्कब रचना है; मुरक्कब ! मुफ़रद रचना नहीं है । जो सन्त आते हैं यह जीव को मुरक्कब रचना से निकाल कर, मुफ़रद रचना में जाने के लिए ख्याल देते हैं :—

मन बुद्धी और चित्त हंकारा, सो झूले की रसर ।  
दोलड़ तीलड़, चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी ॥

वह जो हमारी सुरत यहाँ आई हुई है उसको इस काल के चक्कर के हालात ने बांधा हुआ है । मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार हमारे अन्दर पैदा हुआ हुआ है, उस से हम दुःख, सुख, हाय, मेरा तेरा सब करते रहते हैं :—

जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिल्लाये ।  
शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन विधि नहिं पाये ॥

हम क्या करते हैं ? रोत ही है नां ! कोई



नुक्सान हो जाता है रोते हैं, पीटते हैं, इस माया के चक्कर में फँसे हुए हैं। इससे बचने की तरकोव नहीं नज़र आती :—

तब 'दयाल' को दाया लागी, संत रूप धर आया ।

राधास्वामी अचल मुकामी; शालिग्राम कहाया ॥

वह कहते हैं तब दयाल को, वह जो ताकत है जो असल में हमारे अन्तर सब को देखती है, उसका जो आधार है, उसको दया आई, वह सन्त रूप में आया; वह उनके अपने गुरु शालिग्राम जी के रूप में आया। क्या चिताया ? :—

नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चैताया ।

जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया ॥

जीवों को चिताया अर्थात् समझाया, राज़ बताया - भेद बताया कि असलियत क्या है; यह दुनिया क्या है ? यह काल की रचना है, माया की रचना है, यहाँ हर वक़्त ऐसा हाता रहता है, कोई चीज़ एक हालत में नहीं रहती, यह चिताया और जिसने उनके चिताने का समझा उसको अपने साथ लगा लिया :—



( 45 )

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में, गुरु होय जीव चिताय ।  
जिन-२ माना बचन समझ के, तिन को संग लगाय ॥

जिन्होंने बचन को नहीं समझा ! सत्संग में होता क्या है ? तुम लोग तो सत्संग इतना ही समझते हो कि गाओ, बजाओ, ढोलक खड़काओ । दुनिया गुरु के पास जाती है, गुरु को ही जपका मयारती है, जो गुरु कहता है उसको कोई नहीं सुनता । ही कारण कि सत्संगियों को शान्ति नहीं मिलती, भटकते फिरते हैं । इसवास्ते गुरु के वचन को समझना और सोचना चाहिए :—

सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सुनाऊँ ।  
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊँ ॥

वह क्या बात थी जो वह कहना चाहते थे ? कह तो दिया उन्होंने मगर उस पर अमल नहीं होता था । अब इस उमर में अमल होना शुरू हो गया । क्यों ? क्योंकि मैं तो फँसा हुआ था मन के चक्कर में; गुरु के रूप के साथ ही सारी जिन्दगी प्यार करता रहा । नहीं समझ आती है ! मुझे समझ नहीं आती थी, यह समझ देने के लिए मुझे गुरुआई दी



थी ! अब तुम लोगों की दया से बात मेरी समझ में आ गई कि जो कुछ मैं अपने अन्तर नज़ारे देखता हूँ ये थे क्या ? यह काल और माया का चक्कर है, असली चीज़ नहीं है। हम इसी में फँसे रहे, मैं काफ़ी मुद्दत इसमें फँसा रहा। अब भी फँसा रहता हूँ मगर समझ आ गई मुझे। दाता कहते हैं :—

खेल खेलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ ।  
काल हिंडोले से तू बाचे, बिधि विचित्र समझाऊँ ॥

वह मुझे कहते हैं तुझे खेल खिलाता हूँ। मैं दुःखी होके गया था नां ! मैंने उनसे बहुत प्रेम किया है, वह मेरे प्रेम की क़दर करते थे मगर राज़ मेरी समझ में नहीं आता था। तो वह मुझे कहते हैं कि खेल खिलाता हूँ तुमको; यह खेल ही है नां जो कराया है। यह जो कुछ मुझ से कराया है यह क्या था ? खेल नहीं तो क्या था ? अब पता लगा खेल ही था। कहते हैं विधि अर्थात् तरकीब बताता हूँ। क्या तरकीब ? :-

कर सत्सग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी ।  
साधू बनकर साध लें युक्ती, जा झूले के पारी ॥

कहते हैं सत्सग समझ-दूझ के साथ कर। समझ-



( 47 )

बूझ तो मेरा बाप नहीं जानता था; मैंने तो धन्ने भक्त वाला जपफा मारा हुआ था, जिस तरह धन्ने भक्त ने पत्थर को जपफा मारा, नामदेव ने मूर्ति को जपफा मारा, ऐसे मैंने मारा हुआ था। तो मुझे कहते हैं सत्संग समझ-बूझ के साथ कर। यह समझ-बूझ देने के लिए मुझे यह सारा काम दिया था। जो समझ में नहीं आता था अब मैं समझता हूँ। इसलिए मैं इस उमर में आप लोगों को अपना सच्चा सत्तगुरु मानता हूँ। दया तो दाता दयाल की है मगर आप लोगों की बदौलत मेरी आँख खुल गई :-

साधू बनकर साध ले युक्ती, जा झूठे के पारी ॥  
युक्ति क्या है ? :-

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत संगत में आया।  
तेरा दाँव पड़ा है घूरा, सोच समझ तज माया ॥

यह माया नहीं तजी जाती थी। जब से मुझे आप लोगों के तजुर्वो से मन-माया के रूप का निश्चयात्मक ज्ञान हुआ तो मैं इस माया को तजने के लिए मंत्रबूर हो गया। तो जब यह माया तज जाँदा हूँ तो फिर आगे क्या रह जाता है? मेरा



अबना रूप जो असल में मैं हूँ। जब तक शरीर मे हूँ वह है शब्द। रात को मैं इसी शब्द में था, अब भी इसी शब्द में हूँ। उस शब्द में क्या होता है? मुझे संसार भूला रहता है, संसार नहीं भासता। एक तो यह दुनिया नहीं भासती, एक शरीर नहीं भासता, एक मन के नज़ारे नहीं सामने आते; एक अवस्था छा जाती है जहाँ दुख है न सुख है, न चिन्ता है न फ़िक्र है। वह क्या है? यह वह समझ सकता है जो साधन करता है। इसीवास्ते :—

यह करनी का भेद है, नाहिं बुद्धि विचार।  
कथनी छोड़ करनी करे, तो पावे कुछ सार॥

यह करनी का मज़मून है। करनी क्या करनी है? हम लोग तो मूरतें बनाते रहते हैं (मैं भी बनाता रहा हूँ) बातें करते रहते हैं। इन सब को छोड़ देना और अपने अन्तर केवल शब्द को पकड़ना यही करनी है और करनी कोई नहीं। यह करनी आसान भी है और मुश्किल भी है। बात समझ में आ जाये तो आसान, ना आये तो मुश्किल से मुश्किल। मेरे लिए भी यह मुश्किल थी। सन्त जीवों



को इस संसार के चक्कर से निकालने के लिए यह बताते हैं, भई, नाम को पकड़ बेवकूफ ! यह दुनिया नाम को सिर्फ, मुँह से जो हम पाँच नाम जपते हैं या राम-राम जपते या राधास्वामी मुँह से कहते हैं; दुनिया सब इसको नाम कहती है, यह नाम नहीं है । यह तो क ख ग घ है :—

नाम रहे चौथे पद माहीं,  
यह ढूँढ़ें त्रिलोकी माहीं ।

नाम वह शब्द है जो हम सब कुछ (तन, मन, रूप-रंग) भूल करके जो बाकी शब्द रहता है वह है नाम । हम लड़ते हैं, कोई कहता है यह पाँच नाम है, कोई कहता है राधास्वामी, राम या अल्लाह नाम है, यह सब क ख ग घ हैं बच्चों की बातें हैं । मगर जो इस श्रेणी के हैं उनके लिए ऐसा ही चाहिए । तुम शुरू में मन को इक्ठ्ठा करना चाहते हो, जिस नाम से करो, जो तुम्हारे गुरु ने बता दिया; पाँच नाम के सुमिरन से करो, राधास्वामी से करो, बाहेगुरु से करो, अल्लाह से करो, यह सब झगड़े हैं; नाम वहाँ रहता है । तो दाता मुझको फरमाते हैं :—  
अब की चूके मौज न ऐसी, त्याग काल की आसा ।



उस वक्त का मुझे यह वर दिया हुआ है, स 1921 के शब्द हैं यह। उस वक्त तो मैं चूका हुआ था, अब इस बुढ़ापे में मैं उस चूक को छोड़ गया; बात मेरी समझ में आ गई। चूँकि मेरा कर्म भोग था दाता ने कहा था तालीम को बदल जाना मैं खेंचा जाता हूँ। इसको बोलते हैं कर्म का चक्कर ! मैं चलता हूँ, इसलिए काम करता हूँ वरना मुझे तो इस काम करने में भी अब कुछ Taste नहीं है, Interest नहीं है। नहीं समझ में आती है। गले पड़ा ढोल बजाता हूँ। वह कहते हैं “अब के चूके” दाता ! मैं बड़ा गन्दा आदमी हूँ ! आपने बड़ी दया की, सच्च कहते हैं सन्त पापियों के लिए ही आया करते हैं। जो नेक हैं उनके लिए सन्तों का क्या फ़ायदा हम तो पापी आदमी हैं ! अब भी गन्दे हैं, अपनी कमजोरियों को जानते हैं। हमारा शरीर, हमारा मन यह जो कुछ करता है, यह जिस क्रिस्म के ग्रह, जिस क्रिस्म की प्रकृति से हमारा शरीर बना है, जिस क्रिस्म के हमारे माँ-बाप के ख्यालात थे, उनका असर रहता है। मेरे पर भी रहता है ! मैं भी तो सिपाहो का लड़का हूँ !! सिपाही की



जिन्दगी आप देख लो, पवित्र ज्यादा नहीं हो सकती है ! नहीं समझ में आती है ! तो वह जो माँ-बाप का संस्कार मेरे शरीर में आया हुआ है वह मुझे भी किसी वक़्त गिराता है । सच्ची बात कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता ! गिराता है !! मगर मैं समझ जाता हूँ :—

आज का साधन आजहि करले, कल को होगा उदासा ॥

अगर इस जिन्दगी में तुम वहाँ नहीं पहुँचे तो यह भूल जाओ कि मरने के बाद तुम वहाँ जाओगे बस, यह मेरा तजुर्वा है । जिसने इस जिन्दगी में इस अवस्था को प्राप्त नहीं किया वह जब मरेगा वह उम्मीद न रखे कि मैं मरने के बाद उस अवस्था को हासिल करूँगा । यह सब दुनिया में एक पाखण्ड का जाल है “नाम ले लो, अन्त समय में सत्तगुरु तुमको सत्तलोक पहुँचा देगा” । जो इस जिन्दगी में ही सत्तलोक नहीं पहुँचा, मरने के बाद कौन पहुँचायेगा उसको, न कोई पहुँचा सकता है ।

इस जिन्दगी में जो इस काल और माया के चक्कर के धम को छोड़ के अपने रूप को नहीं



पहुँचा, जिन्दगी में उसने नहीं किया, मर गया तो फिर वह वहाँ कैसे जायेगा ? हो नहीं सकता । मैं सोचता हूँ इस मंजिल तक पहुँचने के लिए जोड़ों को क्या करना चाहिए ? किसी अतीत पुरुष, बीतराग पुरुष की संगत में जाओ, उससे प्रेम करो । उसकी निष्काम सेवा करो । तो रोज़-रोज़ का रगड़ा छाते रहने से रोज़-रोज़ की बचन की धार जो दिमाग पर पड़ती रहती है, उसके सुनते रहने से; जिससे न किसी दिन हो सकता है कि तुम्हारा दिमाग बात को समझ जाये । सबसे बड़ा ईलाज यह है । यही पतंजलि के योग शास्त्र में भी लिखा हुआ है कि कोई ज्यादा उपाय नहीं है तो किसी बीतराग, मायातीत पुरुष की संगत में रहो । उसके बचन सुनो, उसके दर्शन करो, उससे प्रेम करो, मगर निस्स्वार्थ होकर के । जो गरज के लिए जाते हैं उनकी बुद्धियाँ भूँट रहती हैं । निष्काम, बेगरज सेवा करो

अब रह गयी दुनिया, कई दफ़ा सोचता हूँ, मेरे तजुर्वे में आया है कि प्रारब्ध कर्मों के अनुसार



जो कुछ किसी को मिलना होता है, वह मिल जाता है। दुनिया में काम करो, अपनी ड्यूटी समझ के पूरा करो। अगर तुम अपना काम करते रहोगे कृदरत तुम्हारी मदद अपने आप करती रहेगी; इसमें हाय-हाय मत करो !

गुरु वही है जो इन्सान के भ्रम अर्थात् काल कर्म के चक्कर की फाँसी काट दे। दुनिया ने उसको गुरु माना हुआ है जिसका बड़ा भारो डेरा है, जिसके बहुत से चेले हैं। यही बात है नां, और तो कुछ नहीं ! यह बात नहीं है :—

जग में जोव रहें बहुतेरे, पर फ़कीर कोई एका ।

सिंहों के नहीं लेहंडे, हंसों की नहीं पाँति ।

लालों को नहीं बोरियाँ, सन्त न चलें जमात ॥

शेर झुण्डों में नहीं चलते, लालों की बोरियाँ नहीं होती, इक्का दुक्का ही लाल होता है। ऐसे ही सन्तों की जमात नहीं चलती; सन्त के साथ जमात नहीं होती है। मेरी कोई जमात है बताओ ? किसी को चेला ही नहीं बनाया; पीछ नहीं लगाया; काम कर चला गुरु का ।

रात को ख्याल आया कि काल के चक्कर से बचने का कोई तरीका है ? सत्संग, वह भो किसी



बीतराग पुरुष का । वाणी भी जो पढ़नी चाहिए।  
किसी सन्त को पढ़नी चाहिए । आजकल तो तुकबाज़ा  
है, जो भी उठता है चार पद्य लिख देता है :—

साखी लाई बनायकर, इत उत अक्षर काट ।  
कहें कबीर वह कब लग जीर्ये, जूढी पत्तल चाट ॥

दो लफ़्ज किसी के लिए, दो लफ़्ज किसी के  
लिए, दो लफ़्ज किसी के लिए वह पद्य बना देते हैं ।

तो आप लोग आ जाते हैं, मैं साचता हूँ मैं आप  
पर क्या दया करूँ, लोग कहते जो हैं “गुरु की दया  
चाहिए” ! यह तो मैंने तुमको बता दिया कि गुरु  
की दया, मौत आई हुई है उससे नहीं बचा सकती,  
जो तुमने कर्म किये हैं उसका तुमको भोग भोगना  
पड़ेगा । गुरु की दया यही है कि वह तुम्हारी बृद्धि  
को साफ़ कर देता है; तुम्हारे मन का निश्चयात्मक  
बना देता है; अगर वह यकीन तुमको आ जाये ता  
तुम मुसोबत में रहते हुए भी, दुःखों को सहते हुए  
भी, अपनी आत्मा को शांति में रख सकते हो । बस  
इतनी ही बात है और कुछ नहीं । यही सन्तमत  
मेरी समझ में आया, अगर कोई और सन्तमत है  
तो मुझ को इसका पता नहीं ।

सब को राधासामा ।



## अन्तिम चेतावनी

बावजूद दो सूचनाओं के अभी तक बहुत थोड़े मानव मन्दिर पढ़ने वाले सत्संगियों ने पत्रिका पढ़ने के लिए अपना नाम, पता और ग्राहक नं: भेजा है, इसलिए अन्तिम चेतावनी दी जाती है कि जिस सत्संगी का नाम, पता और 'मानव मन्दिर' को जारी रखने की प्रार्थना 31 अगस्त, 1983 तक नहीं पहुँचैगी उसे 'मानव मन्दिर' पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।

—सम्पादक



## शोक समाचार

सब सत्संगियों को अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री के. सी. ग्रोवर, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का 2 जुलाई, 1983 को देहान्त हो गया है। वे परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज के परम भक्त थे। उनके इस अकस्मात् निधन पर मानवता मन्दिर के सभी लोग हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनके पारिवारिक जनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें।



# मनुष्य का स्वरूप और चमत्कारी घटनाएँ

लेखक :

परम सन्त हज़ूर मानव दयाल डा० ईश्वरचन्द्र शर्मा जी  
महाराष्ट्र

फकीर बाबा ने 'मनुष्य वनो' का नारा लगाकर, मानवता धर्म का प्रचार करने के लिए होशियारपुर (पंजाब) में मानवता मन्दिर की स्थापना की। इस मानवता के धर्म की समझने को बहुत ही ज़रूरत है। मनुष्य जाति आज तरह-तरह के मनमत्तान्तरों और धर्मों में बँटी हुई है। इसका कारण है कि तथाकथित घटनाओं के घटने पर, मनुष्य उन घटनाओं के सच्चे रूप को नहीं समझता। वह समझता है कि चमत्कार किसी बाहरी ताकत के कारण ही घट रहे हैं। वह इस बात को नहीं जानता कि उसके अपने मन में कितनी ताकत है। मनुष्य का मन ब्रह्माण्ड के मन का छोटा नमूना है। उसमें चमत्कारी घटनाएँ पैदा करने की ताकत है। वह ऐसे-ऐसे रूप अपने विचारों से पैदा कर सकता है जो आश्चर्यजनक होते हैं और हर प्रकार से उसकी सहायता करते हैं। उसकी उलझी हुई समस्याओं को सुलझाते हैं, बीमारियों को दूर करते हैं और दुर्घटनाओं से बचाते हैं और उन समाधि के ऊँचे स्तरों पर भी ले जाते



हर मनुष्य में ऐसी शक्ति या ताकत मौजूद है, किन्तु अज्ञान के कारण वह अपनी इस ताकत के बारे में जानता नहीं है। इसी अज्ञान के कारण ही मनुष्य इतने धर्मों और मतमनान्तरों में बँट गया है। यदि उसे डम बात का ज्ञान हो जाये कि चमत्कारी घटनाओं का कारण बाहर की कोई ताकत न होकर उसका अपना ही मन है, तो वह अपने से बाहर किसी दूसरी शक्ति को वर्दान नहीं मानेगा।

पानी पर चलना, दो-चार रोटियों से हजारों लोगों की भूख मिटाना और ईश्वर के नाम से रोगियों की बीमारियों को दूर करना ऐसी अजीबो-गरीब घटनाएँ नहीं, जिन्हें ईश्वर की ताकत का प्रदर्शन कहा जाए। ऐसी घटनाएँ तो मनुष्य के अपने ही मन की ताकत के कारण घटित होती हैं और मनुष्य का मन विश्वव्यापी सूक्ष्म मन से सम्बन्धित है।

फकीर दादा ने मनुष्य के मन की ताकत को माना है। किन्तु साथ ही साथ मनुष्य के ऊँचे स्तर की भी व्याख्या की है, जिस पर उसे अत्यात्मिक अनुभव होता है। इसमें यह पिट्ट होता है कि मनुष्य की शक्ति केवल मन तक ही सीमित नहीं। उन्होंने हमेशा डम बात पर जोर दिया है कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है, किन्तु अज्ञान के कारण वह मदा अपने भाग को अपूर्ण समझता है। वह सोचता है कि पूर्णता कहीं बाहर से आती है और इसी कारण ही वह सदा किसी बाहरी चीज का ही सहारा ढुँढ़ता रहता है। वह ईश्वर के किसी खास रूप को या किसी परेश्वर या अवतार को ही ईश्वर मान लेता है। वह इस सहारे पर इतना निर्भर हो जाता है कि वह केवल



उसकी ही पूजा करता है, उसी को ही परम सत्ता मान लेता है। वह अपने उस सहारे की पूजा के लिए अनेक कर्मकाण्ड करता है और अपने आपको अजीब-अजीब उसूलों में बाँध लेता है। वह इतना कट्टर बन जाता है कि दूसरे धर्मों व मतों की दलीलों भी नहीं सुनना चाहता। वह सच्चे रास्ते से भटक जाता है। वह ईश्वर के सच्चे रूप को भूलकर उसके गुरु रूप को पहचान कर इश्वर-उधर भटकता रहता है। दाता दयाल फ़कीर को कहा करते थे—

“फ़कीर गुरु तो तेरे पास,  
तेरे मन में, तेरे तन में, तेरे स्वासों स्वास।

गुरु नहीं काशी; गुरु नहीं मथुरा, गुरु नहीं विच कैला,  
ढूँढ़ इसे अपने हृदय में, वहाँ है गुरु का बास।”

इस बात का ज्ञान न होने के कारण कि गुरु तो हमेशा मन में रहता है, मनुष्य जाति अनेक धर्मों में बाँट गई है और इसी गुटबन्दी के कारण ही सारे संसार में नफ़रत और संघर्ष का बोलबाला है।

भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों ने अपने-अपने धर्मगुरुओं के असली रूप को न पहचान कर, अज्ञान के कारण उनको अलग-अलग ईश्वर मान लिया है। यदि ऐसे व्यक्तियों को मनुष्य के असली रूप का ज्ञान हो जाए तो वे अपने-अपने गुरुओं की पूजा करने और अलग-अलग मतमतान्तरों में बाँट जाने की जगह अपने गुरुओं के आदर्श जीवन का अनुसरण करेंगे। असल में धार्मिक बनने का मतलब है सच्चा मनुष्य बनना। फ़कीर दादा ने जिज्ञ



मानवता धर्म का नारा लगाया है, वह सभी धर्मों में भाईचारा ला सकता है और यही मानवता धर्म मनुष्य को उसके परम लक्ष्य, परम धाम की ओर भी ले जा सकता है।

फकीर बाबा बार-बार कहते हैं कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है और उस पूर्णता को पाने का पहला कदम है कि वह सच्चा मनुष्य बने। वेद तथा उपनिषद् भी मनुष्य को पूर्ण मानते हैं। उनमें यह लिखा है कि ब्रह्माण्ड में मनुष्य ही सबसे ऊँचा सत्ता है। ईशोपनिषद् के आरम्भ में यह लिखा है:—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

अर्थात् वह परम सत्ता, ईश्वर, ब्रह्म या राधास्वामी आदि अपने आप में पूर्ण हैं। यह मनुष्य उस पूर्ण आधार से पैदा हुआ है, इसलिए वह भी अपने-आप में पूर्ण है। जब मनुष्य अपने आपको पहचान लेता है, तो उसे परम सत्ता का भी ज्ञान हो जाता है। फकीर बाबा कहते हैं, “मालिक के असली रूप को पहचानो, मालिक तो तुम्हारे अन्दर है। वह शब्द और प्रकाश का आधार है, वह सारे ब्रह्माण्ड का आधार है। वह अकाल पुरुष है। वह देह, मन और प्रकाश से परे है।”

सारा संसार मन के चक्कर में ही फँसा हुआ है। जो कुछ मन कहता है, हम वही करते हैं। अच्छाई भी मन करता है और बुराई भी मन। योगी, जती तथा संन्यासी भी मन के चक्कर में फँसे रहते हैं। फकीर बाबा के शब्दों में :—



मन ही ज्ञान है, मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष ओरभोग ।  
 मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग ॥  
 मन के अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही है रोग ।  
 मन गोबिन्द मन गोरख रूपा, मन हो है वियोग ।  
 मन ही पानी, मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग ।  
 मन ही गुरु मन ही चेला, मन ही ब्रह्मा संयोग ।  
 मन ही का व्यवहार जगत् में, नाहिं जानें यह लोग ॥

जब तक मनुष्य मन के सच्चे रूप को पहचान नहीं लेता, तब तक उसे न ही सांसारिक सुख मिल सकता है और न ही वह मोक्ष की ओर ही बढ़ सकता है। यही कारण है कि फकीर बाबा ने मानवता के धर्म को सबसे ऊँचा बताया है।

मनुष्य का असली रूप, जिसे फकीर बाबा मनुष्य की उत्पत्ति कहते हैं, प्रकाश से सम्बन्ध रखता है। यह वही प्रकाश है, जो परम सत्ता के धाम सतलोक से निकलता है। उन्होंने यह बताया है कि विज्ञान का सत्य, वेदों-उपनिषदों का सत्य और सन्तों द्वारा अनुभव किया गया सत्य एक ही है। वह कहते हैं कि मनुष्य को उत्पत्ति को चाहे सनातन धर्म, चाहे विज्ञान, चाहे सन्तमत किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाए, एक ही परम आधार से हुई है। वह कहते हैं :—

“मैं आधुनिक युग का मनुष्य हूँ। विज्ञान कहता है कि जीवन का विकास जल से हुआ है। जल में छोटा-सा



जन्तु अमोवा वनस्पति में विकसित हुआ, उसके बाद पशु, पक्षियों आदि का विकास हुआ। पशुओं के विकास में वानर सबसे ऊँचा माना गया है और यह कहा गया है कि मनुष्य का रूप वानर से ही विकसित हुआ है। हिन्दू धर्मग्रन्थ इस बात से सहमत हैं कि जीवन की उत्पत्ति जल से हुई। हिन्दू धर्म के मुताबिक ईश्वर के चौबोस अवतार हुए हैं। पहला अवतार मच्छ का हुआ, उसके बाद कच्छ, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र और कृष्ण आदि के अवतार हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू ग्रन्थों में यज्ञोपनिषद् जल को ही जीवन की उत्पत्ति का कारण माना गया है, क्योंकि सबसे पहले अवतार मच्छ की उत्पत्ति पानी में ही हुई।

मैं इस प्रश्न पर कई बार विचार करता हूँ कि जल में जीवन कहाँ से आया ? जल का कारण वायु है, वायु का स्रोत अग्नि है, अग्नि आकाश से पैदा होती है और आकाश का आधार शब्द है। जल में प्रकाश और शब्द के गुण हैं। इस प्रकार जल धीरे-धीरे जीवन के अनेक स्तरों से गुजर कर मनुष्य के रूप में विकसित हुआ है। वही प्रकाश हमारे अन्दर निवास करता है। अब सवाल उठता है कि यह प्रकाश कहाँ से आया ? यह प्रकाश सतलोक से आया है। सतलोक ही प्रकाश का परम स्रोत है। उसी परमधाम से ही उस प्रकाश की किरणें निकलती हैं, जो मनुष्य में, पशुओं में, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं देवी-देवताओं में मौजूद है।”\*

\*फकीर संदेश, होशियारपुर, पृ० ९-१०।



इस प्रकार मनुष्य की उत्पत्ति को प्रकाश से और जीवन के विकास को जल से मानकर फकीर बाबा इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मनुष्य परम सत्ता एवं उम सतलोक से जाया है, जो कि प्रकाश का अनन्त समुद्र है। इसलिए ही मनुष्य अपने अनन्त धाम को वापिस जा सकता है।

फकीर बाबा का कहना है कि ईश्वर के तीन मुख्य लक्षण हैं : स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण। उसका स्थूल लक्षण उसकी स्थूल सृष्टि की रचना, उमका सूक्ष्म लक्षण उसकी सर्वज्ञता और उसका कारणता का लक्षण उसकी सर्व-व्यापकता है। मनुष्य में भा ईश्वर के ये तीनों लक्षण मौजूद हैं। हालांकि ईश्वर इन तीनों लक्षणों के होते हुए भी इन सबसे परे है, फिर भी यदि कोई मनुष्य ईश्वर को देखना चाहे, तो उसे ईश्वर के इन तीनों लक्षणों को अपने आप में देखना चाहिए। उसमें ईश्वर का स्थूल रूप मनुष्य का वीर्य है, जिससे वह सन्तान पैदा करता है। ईश्वर का सूक्ष्म रूप मनुष्य के अपने विचार या इच्छा में है और ईश्वर का कारणात्मक रूप वह प्रकाश है, जो सारे विश्व को और मनुष्य के अन्दर की पोषक शक्ति है।

फकीर बाबा ने स्वयं भगवान राम और भगवान कृष्ण के दर्शन किये, किन्तु फिर भी ऐसे-ऐसे चमत्कारी अनुभवों से पूरी तरह से सन्तुष्ट नहीं हुए। इस बात का पूरा व्योरा आगे दिया जायेगा। यहाँ पर तो मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि बाबा ने सच्चे ईश्वर के ज्ञान को कैसे प्राप्त किया। मनुष्य के मन की ताकत की कोई सीमा नहीं है और इस मन ही की ताकत के कारण लोम बड़े-बड़े चमत्कार या करिश्मों का अनुभव करते हैं। अब यह यहाँ सवाल उठता है कि मन को यह ताकत मिलती



( 64 )

कहाँ से है ? इसका उत्तर सीधा-सादा है। मनुष्य के मन को ताकत देने वाला है विश्वव्यापी या सारे विश्व में फैला हुआ मन, जिसे सहस्रदल कमल कहा गया है, यह विश्वव्यापी मन देश, काल और कारण के जगत में अपना काम कर रहा है। इसे काल भी कहा जाता है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में इसे काल पुरुष कहा गया है। देश, काल और कारक इस जगत् के तीन पहलू हैं। सच्चा ईश्वर तो इन तीनों से भी परे है। कोई भी गुरु या धार्मिक नेता, जो इस सच्चाई को अपने चेलों से छपाता है, वह सच्चा गुरु नहीं हो सकता। यह मुमकिन है कि ऐसे गुरु को ईश्वर के सच्चे रूप का खूद को भी अनुभव नहीं हुआ हो। फकीर बाबा ऐसे गुरुओं की निन्दा नहीं करते। वह तो कहते हैं कि किसी भी मत या धर्म पर चलने वाले व्यक्ति, जो राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, जिहोवा या जीजस काईस्ट या मोहम्मद आदि के रूपों को देखते हैं, उनका यह अनुभव उनके अपने-अपने खास रूप में खास लगाव या पक्के विश्वास के कारण ही होता है।

फकीर बाबा अपने अनुभव के आधार पर बताते हैं कि मनुष्य का सच्चा रूप क्या है। ईश्वर क्या है और मनुष्य का ईश्वर से क्या सम्बन्ध है ? अनेक ऋषियों, विचारकों तथा वैज्ञानिकों ने इन सवालों पर बहुत विचार किया है और आखिर में इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मनुष्य ईश्वर का ही रूप है। वेदों में लिखा है कि जो पिण्ड यानि कि छोटी से छोटी चीज में मौजूद है वह ब्रह्माण्ड में भी मौजूद है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि वेदों में यह बताया गया है कि मनुष्य पूर्ण ब्रह्म से पैदा होने के कारण खुद भी पूर्ण है। यहूदियों



और ईसा मसीह के धर्म में भी इस बात को माना गया है। सभी धर्मों में जिन-जिन चमत्कारी घटनाओं का जब-जब भी वर्णन किया गया है, वे सभी प्रकाश से ही सम्बन्ध रखती हैं। लोगों ने जहाँ-जहाँ भी फकीर बाबा के रूप को प्रकट होते देखा है, उन सबका कहना है कि उन्होंने बाबा के रूप को प्रकाश से निकलते हुए देखा। अब सबाल उठता है कि क्या यह प्रकाश फकीर बाबा के कारण शरीर से ही पैदा होता है? उसका जवाब यहाँ नहीं दिया जा सकता। जो कुछ ऊपर कहा गया है उस सबका मतलब यह है कि प्रकाश के आधार पर ही चमत्कारों की सही व्याख्या दी जा सकती है।

वे लोग जो केवल चमत्कारों से ही मोहित हो जाते हैं, वे सच्चे ईश्वर को नहीं पहचानते। वे ईश्वर के किमी स्वाम रूप के ही पुजारी होते हैं। वे इस खास रूप में इतना अन्धविश्वाम रखते लगते हैं कि उम रूप के अलावा उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगता। वे दूसरे रूपों तथा मतों की निन्दा करते हैं। ऐसे लोग अन्धेरे में हैं। फकीर बाबा ने जीवन-भर ईश्वर के सच्चे रूप को जानने की खोज की है और पूरी सच्चाई से अपने अनुभव को खोल कर लोगों के सामने रख दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि आप लोगों के लिए अन्धविश्वाम, चमत्कार, रुढ़िवाद और कर्मकाण्ड आदि के चक्कर से बाहर निकलना बहुत कठिन होता है। मनुष्य का मन हमेशा उसकी इच्छा या विचारों का ताना-बाना बुनकर, उसी नमूने के



मुताबिक ही अपनी जिन्दगी चलाता है। इसलिए ठीक ही कहा गया है, “जैसी करनी वैसी भरनी, जैसा विचार वैसा विकास।” अतः मनुष्य में ईश्वर का सूक्ष्म रूप इच्छा या विचार ही है।

फकीर बाबा कहते हैं कि एक बार बनारस से एक सज्जन उनके पास आया और बोला, “मैं ईश्वर को देखना चाहता हूँ।” बाबा ने उसे कहा कि ईश्वर को सर्व-शक्तिमान कहते हैं और वह सारी सृष्टि को पैदा करता है। सब लोग सदा यही कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के अन्दर है। इसलिए ईश्वर का स्थूल रूप मनुष्य का अपना वीर्य ही है। जिस प्रकार ईश्वर अपनी शक्ति से विश्व की सृष्टि करता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य अपने वीर्य से सन्तान पैदा करता है। जो मनुष्य अपने वीर्य को बेकार ही नष्ट करने हैं, वे ईश्वर का एक प्रकार से अपमान करने हैं और इसी कारण उनकी वृत्ति भी वैग भाव, विमा आदि की ही जगती है। आप ईश्वर की पत्नी किसी भी रूप में क्यों न करें यदि आप अपने ईश्वर के स्थूल रूप अपने वीर्य की रक्षा नहीं करते तो यकीन मानिये कि आपको कभी भी सुख और शान्ति नहीं मिलेगी। जिस ईश्वर की आप पूजा करते हो, वह आपको दुःखों से बचाने के लिए नहीं आयेगा। ईश्वर के स्थूल रूप की सच्ची पूजा है अपने वीर्य की रक्षा करना और केवल सन्तान पैदा करने के लिए ही उसका प्रयोग करना।



मनुष्य के अन्दर ईश्वर का सूक्ष्म रूप है उसकी विचार शक्ति, इसलिए विचार को सदा शुद्ध रखो। ईश्वर का तीसरा रूप है प्रकाश। प्रकाश के बिना कोई भी चीज़ इस पृथ्वी पर टिक नहीं सकता। प्रकाश सब चीज़ों के अन्दर ईश्वर का कारणात्मक रूप है। अतः हम कह सकते हैं कि ईश्वर सब प्राणियों में तीन रूपों में रहता है। उसका पहला रूप है मनुष्य का वीर्य, दूसरा रूप है मन या विचार और तीसरा रूप है प्रकाश। अब आप खुद ही बताओ कि ईश्वर का सच्चा पुजारी कौन हो सकता है? सच्चा पुजारी वह नहीं जो केवल अंधविश्वास के कारण ही मन्दिर मसजिद, चर्च या गुरुद्वारे में जाता है, घंटियाँ बजाता है, गीत गाता है। सच्चा पुजारी असल में वह है जो ईश्वर रूपा वीर्य को बरवाद नहीं करता, जिसके विचार शुद्ध हैं और जो अपने अन्दर के प्रकाश में मस्त रहता है। सनातन धर्म की संध्या की प्रार्थना में भी यही सत्य बताया गया है। किन्तु दुःख की बात यह है कि आजकल सनातन धर्म केवल रीति-रिवाजों और मन्त्रों के पढ़ने तक ही सीमित रह गया है। कोई व्यक्ति गायत्री मन्त्र के सही मतलब को समझता ही नहीं और उस मन्त्र में बताये हुए प्रकाश को अपने अन्दर देखने की कोशिश नहीं करता। मनुष्य अपने अन्दर के प्रकाश को तभी देख सकता है, जब वह ब्रह्मचर्य का पालन करे और सदा शुभ विचार रखे। सदा सुखी तथा प्रसन्न रहने के लिए मनुष्य को चाहिए



कि वह अपने अन्दर रहने वाले ईश्वर के स्थूल, सूक्ष्म और कारण—तीनों रूपों को समझे और उनका अनुभव करे।”\*

इससे यह स्पष्ट है कि सनातन धर्म में भो, उसो सत्य को बताया गया है, जिसे सन्तमत मानता है। फकीर बाबा ने जो ये बातें बताई हैं उन पर खास ध्यान देना चाहिए। मनुष्य मन के चक्कर और चमत्कारों के जाल से तब तक ऊपर नहीं उठ सकता जब तक कि वह फकीर बाबा के इस व्यावहारिक उपदेश को अपने जीवन में नहीं उतारता। संसार के सुख और रहानियत दोनों अंग मनुष्य के अपने अन्दर ही मौजूद हैं। वह बेकार ही इनको बाहर ढूढ़ने के लिए भटकता रहता है। उसको अपनी पूर्णता का ज्ञान तभी हो सकता है, जब वह पूर्ण गुरु सत् पुरुष का सत्संग करे और उसे अपना इष्ट मानकर उसके उपदेशों पर चले। उसकी छुपी पूर्णता उसे धीरे-धीरे चमत्कारों के मानसिक स्तर से ऊपर उठा प्रकाश तक ले जा सकती है और बाद में उसे परम धाम की ओर भी ले जा सकती है।

लेकिन पूर्णता के रास्ते में बड़े-बड़े ऐसे प्रलोभन सामने आते हैं, जो मनुष्य को चमत्कारों के स्तर के आगे

---

\*The Art of Living by Faquir Baba,  
पृष्ठ ४४-४५।



नहीं बढ़ने देते। फकीर बाबा ने यह चेतावनी ठीक ही दी है कि इम्र चमत्कारों के स्तर को ईश्वरानुभूति का परम स्तर कभी नहीं समझना चाहिए। चमत्कारों का अस्तित्व है, उन्हें झूठा नहीं कहा जा सकता लेकिन चमत्कार ही सब कुछ हैं यह कहना भी ठीक नहीं। फकीर बाबा उस सन्त-मत का प्रचार करते हैं जो ईश्वर और मनुष्य दोनों के सच्चे रूप को पहचानने एवं सत्य का धर्म है। मनुष्य असली रूप में ईश्वर का ही सच्चा रूप है, किन्तु उसका मन काल का मानसिक स्तर है, जिसे माया कहा गया है। यही मन हमें देश, काल और कारणता की सीमाओं से मुक्त भा कर सकता है और जन्म-मरण के बन्धन में भी डाल सकता है। फकीर बाबा कहते हैं कि इस मन के स्तर से ऊपर उठकर हम अपने सच्चे रूप को पहचान सकते हैं। उसका एक ही तरीका है, वह है कि हम हर तरीके से सच्चे मनुष्य बनें। सच्चा मनुष्य बनने पर ही भिन्न-भिन्न धर्मों में फैली हुई गलतफहमियों को दूर किया जा सकता है। सच्चे मनुष्य ही धर्मों में आपस में सहयोग लाकर धर्म के नाम पर जो बंटवारा हुआ है और रोज़ हो रहा है, उसे रोक सकते हैं। आज भी इस दुनिया में धर्म की कट्टरता के कारण जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं, उसका एक ही इलाज है, मानवता धर्म को अपनाना। फकीर बाबा का “मनुष्य बनो” का धर्म सब धर्मों की इज्जत करता हुआ भी सब धर्मों और मतमतान्तरों से परे है। ऐसा मानवता का सच्चा धर्म ही हम सबको सच्चे ईश्वर की ओर ले जा सकता है :



## मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी । परम दयाल जी सहाई ।

मैं आज ही विदेशी दौरे से होशियारपुर पहुँचा हूँ और अब सब को इस महोत्सव को सद्भावना भेन रहा हूँ । इसमें कोई शक नहीं कि मेरा यह दौरा दो दृष्टियों से सफल रहा है । ये दो दृष्टियाँ मेरे निजी कार्य और परम दयाल जी की आज्ञा का पालन करने से सम्बन्ध रखती हैं । दूसरे शब्दों में मेरा इस बार अमेरिका और योरूप जाना घरेलू काम और सत्संग देने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ही था । इसलिए मैं तीन महोत्सवों के दौरान में सिर्फ डेढ़ महीना ही जगह-जगह पर सत्संग दे सका । अमेरिका और कनेडा में सत्संगियों के प्रेम का अनुभव हुआ । अमेरिका के सत्संगों में से FLORIDA (फ्लोरीडा) MARYLAND (मेरीलैण्ड), WISCONSIN (विस्कॉन्सिन) और वर्जीनिया के सत्संग बहुत ही अच्छे रहे । सत्संगियों को याद होगा कि परम दयाल जी को हर बार वर्जीनिया बीच में A.R.E. (Association for Research & Enlightenment) में बुलाया जाता था और अमेरिका और दूसरे देशों से आये हुए A. R. E. के सदस्य परम दयाल जी के अंग्रेजी में दिये गये सत्संगों से लाभ उठाते थे । इस बार उस



संस्था के वर्तमान प्रधान स्वर्गीय श्री ह्यूलेड केसी के सुपुत्र डा० चार्ल्स थामस केसी ने परम दयाल जी के चोला छोड़ने के बाद मुझे उन्हीं के उत्तराधिकारी के रूप में 26 जून 1983 के दिन एक विशेष सत्संग आयोजित करके सम्मानित किया। उन्होंने इस सत्संग की सूचना पहले से ही प्रकाशित कर दी थी। इसके फलस्वरूप बहुत से श्रोतागण दूर-दूर से इस सत्संग को सुनने के लिए आये। डा० चार्ल्स थामस केसी ने इसी उपलक्ष्य में कुछ चूने हुए व्यक्तियों के साथ मझे और भाग्य जी को अपने घर प्रीतिभोज दिया। डम अवसर पर डा० विलियम गोडन हार्डिजर, उनकी पत्नी श्रीमती नैसी और फ्लोरिडा (FLORIDA) से Miss Gloria Albritton भी हमारे साथ थे। सत्संग बहुत ही सफल रहा और हमारे दिन मैं डा० चार्ल्स थामस केसी को उनके दफ्तर में मिला। हमारी इस मुलाकात में यह तय हुआ कि A.R.E. और मानवता मन्दिर की संस्थाएँ विश्व में धार्मिक सत्यता और मानव प्रेम का प्रचार करने में सहयोग देंगी। इसी मिलसिले में 'मानव मन्दिर' और परमदयाल जी का साहित्य A.R.E. में भेजा जायेगा और A.R.E. का साहित्य मानवता मन्दिर में उपलब्ध होगा। मानवता मन्दिर और A.R.E. के उद्देश्य समान हैं। इन दोनों संस्थाओं के परस्पर सहयोग से धर्म की सच्ची तालीम को मानव मात्र की भलाई के लिए विश्व के सभी देशों में फैलाया जा सकता है।

इस दौरे की सफलताओं में से A.R.E. से सहयोग की वार्ता बहुत ही सफल रही है। इंग्लैंड में लंडन बरमिंघम, वैंस्ट ब्रौमविच और गान्धी हाल मांचैस्टर में सत्संग बहुत



ही सफल रहे। मांचैस्टर की गान्धी हाल की संस्था के हजारों इंग्लैंड में रहने वाले भारतीय सदस्य हैं। उन्होंने यह आग्रह किया है कि भविष्य में मैं उनकी संस्था के लिए अधिक समय दूँ। इसी तरह से A R E. ने भी अगले वर्ष अपनी संस्था में मेरा एक सप्ताह का प्रोग्राम रखा है। यह सब कुछ कहने का उद्देश्य यह है कि परम दयाल जी महागज की असीम कृपा से उनका सत्यता धर्म को विश्व में फैलाने का मकसद अपने आप ही पूरा होने जा रहा है। इस महान् कार्य में भारत के सभी सत्संगियों और होशियारपुर के मानवता मन्दिर के सत्संगियों, कार्यकर्त्ताओं और ट्रस्टियों का बड़ा सहयोग रहा है। परम दयाल जी के प्रिय प्रिंसिपल श्री एस. एन. भारद्वाज ने मेरी अनुपस्थिति में सत्संग देने का कर्त्तव्य बहुत ही सूचारु रूप से निभाया। श्री एस. एन. भारद्वाज कई वर्षों तक फकीर लाइब्रेरी चैंगीटैवल ट्रस्ट के प्रधान रहे हैं और अब भी उसी ट्रस्ट के वरिष्ठ सदस्य हैं। परम दयाल जी की अनुपस्थिति में भी प्रिंसिपल भारद्वाज जी सत्संग दिया करते थे और लेख लिखा करते थे। हमें इस बात का गर्व है कि भारद्वाज जी मानवता मन्दिर की रूहानियत की दृष्टि से सेवा कर रहे हैं। भविष्य में भी श्री भारद्वाज जी मेरी अनुपस्थिति में यह शुभ कार्य करते रहेंगे। इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

मानवता मन्दिर विश्व भर में पच्चाई, रूहानियत और शान्ति का केन्द्र है, इसमें कोई शक नहीं। 'मानव-मन्दिर' पत्रिका सच्ची मानवता और सच्ची रूहानियत को सत्संगियों तक पहुँचाती है। पिछले महीने के सन्देश में मैंने संक्षेप रूप में गुरु और शिष्य के लक्षण बता कर



यह बतलाने की कोशिश की थी कि अभयदान या नाम दान ही सबसे ऊँचा दान है। नाम दान का बहुत ही गहरा मतलब है। बहुत लोग समझते हैं कि गुरु मन्त्र की फूंक मार कर शिष्य को नाम दान देता है लेकिन यह विचार सही नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि गुरु से नाम लेकर सुमिरन, ध्यान और भजन के द्वारा शिष्य उस मंजिल पर पहुँच सकता है जहाँ पर वह सुख-दुःख, लाभ-हानि और जन्म-मरण से भी ऊपर उठ जाता है। नाम को यह हालत ही राधास्वामी हालत कहलाती है। इस हालत पर पहुँचने के लिए एक सच्चा गुरु अलग-अलग व्यक्तियों को उनके स्वभाव के मुताबिक रास्ता बतलाता है। इसलिए नाम दान में कई दर्जों होते हैं। इन्हीं दर्जों से गुजर कर ही सत्संगी या भक्त आखिरी मंजिल पर पहुँच सकता है। नाम दान के चार दर्जों को बतलाते हुए स्वामी जी महाराज ने लिखा है :—

एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम ।

द्विजन्म तोसरे मुक्ति पद, चौथे में निज धाम ॥

यहाँ पर जन्म शब्द का मतलब एक पूरा जीवन नहीं है। यहाँ पर एक जन्म का मतलब कुछ समय है। यह वक्त कई महीनों का या वर्षों का हो सकता है। जब तक सबसे पहले भक्त या जिज्ञासु गुरु से प्रेम नहीं करता उसको सच्चा ज्ञान नहीं मिल सकता। इस गुरुभक्ति की पूरी व्याख्या तो किसी और स्थान पर की जायेगी। यहाँ पर इतना कहना जरूरी है कि सत्संगी गुरु पर ध्यान इसलिए लगाता है और उसकी भक्ति इसलिए करता है कि वह



अपनी वृत्ति को बाहर से हटा कर गुरु पर लगा दे । दूसरे शब्दों में वह बहिर्मुखी हालत से हट कर गुरुमुखी हालत में आ जाये । इसा तरह काफी वर्षों तक गुरु भक्ति करने के बाद ही गुरु अपनी दया से उसको वह नाम या गुरु मन्त्र देगा जिसका सुमिरन करने से सत्संगी घीरे-घीरे अन्तर्मुखी होने लगेगा । काफी समय तक सुमिरन, ध्यान और भजन से अन्तर्मुखी होने के बाद ही इसी जीवन में भक्त उस हालत का अनुभव करता है जिसे जीवन्मुक्त अवस्था कहा जाता है । अगर किसी सत्संगी ने जीते जी इस जीवन्मुक्त अवस्था को हासिल नहीं किया वह मरने के बाद सत्तलोक नहीं पहुँच सकता । उसे मरते समय गुरु का कोई रूप सत्तलोक नहीं ले जा सकता । इस हालत में अभ्यास को जारी रखता हुआ सत्संगी आखिर में शब्दगति से भी ऊपर चला जाता है और उसे उस सच्चाई का पता लग जाता है जो अलख और अगम से भी परे है । वह अपने आपे में ठहर जाता है । इसी आखिरी मंजिल को परम धाम या निज धाम कहा गया है । नाम दाब के इस विषय को जारी रखते हुए अगले महीने सरल से सरल भाषा में इन चारों अवस्थाओं पर रोशनी डाली जायेगी और इस सिलसिले को अगले मासिक सन्देशों में जारी रखा जायेगा । इन शब्दों के साथ मैं आप सबको सच्चे दिल से सद्भावना देता हूँ कि आप सुख,शान्ति और उन्तोष का अनुभव करें ।

सबको राधास्वामी ।

आपका सदा ही फकीरमय  
मानव



## वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।  
गुरु बसो चिल आय मेरे, बख्श दो निज नाम ॥  
तेरी शरणामत हुआ फिर, किसकी राखूं अस ।  
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।  
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।  
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ॥  
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।  
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ॥  
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।  
राधास्वामी को दया से, भाग पूरन जाग ॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग  
21-8-83 को होगा ।





Regd. No. 2626574  
**MANAV MANDIR**

**AUGUST 10th 1983**  
**NWHSP-7**

**ADDRESS**



**To**

1283 Sh. A. Hanmanth Rao  
H. No. 10-3-194/8  
Humayun Nagar  
Hyderabad-500028 A.P.

**From**

**MANAVTA MANDIR**  
**SUTHERI ROAD,**  
**HOSHIARPUR.**

**Phone : 2022**

**5th Dev Res Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)**

*Rudra Swamy*